

## श्रम विभाग

आदेश

दिनांक 30 अप्रैल, 1984

सं० श्रो.वि./जी. जी. एन./36-84/16795.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० स्टैर्ड रबड़ मिल खाण्डसा रोड़, गुडगांवा, के श्रमिक श्री युगेश्वर साह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री युगेश्वर साह की सेवाओं का समापन न्यायोनित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./हिसार/22-84/16802.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० कुम्भा सहकारी औषण एवं सेवा समिति लि०, तहसील हांसी, जिला हिसार, के श्रमिक श्री पृथ्वी सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

और नूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई) श्रम 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री पृथ्वी सिंह<sup>\*</sup> की सेवाओं का समापन न्यायोनित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./हिसार/21-84/16809.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि म० भारोखान को-आप्रेटिव क्रेडिट एण्ड सर्विस सो. लि., भारोखान, तहसील व जिला सिरसा के श्रमिक श्री हजारी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा(1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.एस.ओ. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री हजारी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोनित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो.वि०/जी.जी.एन./124-84/16816.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० मैडीटेक्स कार्मा प्रा. लि., बी-32, इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, महरोली रोड, गुडगांवा के श्रमिक श्री राम चंद्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम चन्द्र की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. घो.वि./SPT/58-83/16828.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं जी.पी.एसैक्स फार्म प्रा. लि., खेड़ा रोड, वहालगढ़, सोनीपत के श्रमिक श्री गुलाब सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडीगढ़ समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 अक्टूबर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गुलाब सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?